कर तू प्रभु का ध्यान

(रचयिता-आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज)

कर तू प्रभु का ध्यान-बाबा, कर तू प्रभु का ध्यान।
निज घट में भगवान-बाबा, निज घट में भगवान॥

काँटों में भी जीवन तेरा, फूलों सा खिल जाएगा
खोज रहा है जिसको तू वह, पल भर में मिल जायेगा
खुद को तू पहिचान-बाबा, खुद को तू पहिचान॥1॥

धन-वैभव यह महल-खजाना, कुछ भी साथ न जाएगा
सुबह खिला जो फूल बाग में, साँझ समय मुरझायेगा
कर ले धर्मध्यान-बाबा, कर ले धर्मध्यान॥2॥

कभी किसी का दिल दुःख जाये, ऐसे बोल कभी मत बोल
घावों पर मल्हम बन जाएँ, ऐसे बोल बड़े अनमोल
कहलाता यह ज्ञान-बाबा, कहलाता यह ज्ञान॥3॥

माता-पिता, बड़ों का आदर, धर्ममार्ग पर चलो सदा
गुरुजन की नित सेवा करना, श्रावक का कर्त्तव्य कहा
पाओगे सम्मान-बाबा, पाओगे सम्मान॥4॥

हिंसा, झूठ, कुशील, परिग्रह, चोरी यह मत पाप करो
पाप विनाशक, धर्म प्रकाशक, णमोकार का जाप करो
हो सम्यक् श्रद्धान- बाबा, हो सम्यक् श्रद्धान॥5॥

राग-द्वेष भावों के कारण, भवसागर में डूब रहा
गँवा रहा भोगों में जीवन, मन फिर भी न ऊब रहा
क्यों बनता नादान-बाबा, क्यों बनता नादान॥6॥

जिसको अपना कहा आज तक, हुआ कभी न वह अपना
जिसकी खातिर जिया आज तक, निकला वह सुंदर सपना
क्यों तू करे गुमान-बाबा, क्यों तू करे गुमान॥7॥

मेंढक ने प्रभु ध्यान किया जब, मर कर देव हुआ तत्काल
समवसरण में प्रभु को ध्याया, जीवन उसका हुआ निहाल
मिट जाये अज्ञान-बाबा, मिट जाए अज्ञान॥8॥